प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण (फोल्डर नं. ००१४२६)

मुख्य टाइटल
आमुख
द्वितीय संस्करण का प्रास्ताविक
प्रथम संस्करण का प्रास्ताविक
दो शब्द
प्रारंभिक
वर्णमाला
अनुक्रमणिका
१. ध्वनि परिवर्तन----१
क. स्वर-विकार----१
ख. व्यंजन-विकार----५
असंयुक्त व्यंजन----५
(अ) प्रारंभिक----५
(ब) मध्यवर्ती ----६
(स) अंतिम---- १०
(२) संयुक्त व्यंजन---- ११
(अ) प्रारंभिक---- ११
(ब) मध्यवर्ती ---- १२
२. विविध प्राकृत भाषाएँ---- १८
(क) महाराष्ट्री ---- १८
(ख) शौरसेनी ---- १९
(ग) मागधी---- २१
(घ) अर्धमागधी---- २३
(ङ) पाली---- २७
(च) पैशाची ---- ३१
(छ) चूळिका पैशाची ---- ३३
(ज) अपभ्रंश ---- ३४
३. पद-रचना – नाम—प्रकरण---- ३८
प्रारंभिक---- ३८
(अ) स्वारन्त शब्द---- ४०
(ब) व्यंजनांत शब्द ---- ५०
(स) अपभ्रंश – नाम विभक्ति प्रकरण---- ५४
४. पद-रचना – सर्वनाम प्रकरण---- ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. पद-रचना – क्रिया-प्रकरण ---------- ६९
प्रारंभिक ---------- ६९
वर्तमान काल ---------- ७२
भविष्य काल ---------- ७४
आज्ञार्थ ---------- ७७
विधिलंग ---------- ७८
भूतकाल ---------- ७९
कालातिपत्ति ---------- ८२
पूर्ण वर्तमान एवं पूर्णभूत ---------- ८३
६. कृदन्त एवं प्रयोग ---------- ८४
(क) वर्तमान ---------- ८४
(ख) भविष्यत् ---------- ८४
(ग) हेत्वर्थ ---------- ८५
(घ) संबंधक-भूत ---------- ८६
(च) विध्यर्थ ---------- ८८
(छ) कर्मणि-भूत ---------- ८९
(ज) कर्तृ-भूत ---------- ९१
(झ) कर्मणि प्रयोग ---------- ९१
(त) प्रेरक प्रयोग ---------- ९२
(थ) नामधातु ---------- ९३
७. शब्द रचना ---------- ९४
(क) विशेषण ---------- ९४
(ख) भाववाचक ---------- ९५
(ग) स्वार्थे ---------- ९६
(घ) स्त्रीलिंग ---------- ९७
(च) समास ---------- ९७
८. अव्यय, परसर्ग एवं देश्य शब्द ---------- ९९
अ. अव्यय ---------- ९९
ब. परसर्ग ---------- ११०
स. देश्य शब्दः ---------- ११०
(क) तद्भव ---------- १११
(ख) अनुमानित प्राचीन स्रोत ---------- ११२
(ग) अनुकरणात्मक ---------- ११२
(घ) विदेशी ---------- ११३
(च) शुद्ध देश्य ---------- ११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(छ) तद्भव कोटि के परंपरागत----------११४
९. परिशिष्ट ----------११५
अ. अर्धमागधी भाषा विषयक नयीं विशेषताएँ----------११५
ब. प्राचीन श्वेताम्बर जैन आगम ग्रंथ---------- इसियभासियाइं में से उद्धृत मूल अर्धमागधी की वह शब्दावली जो महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव से वंचित रह गयी----------११९
संदर्भ-ग्रंथ----------१२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org